21वीं शदी में भारत की विदेश नीतिः चुनौतियां और संभावनाएं

मनीषा
शोधार्थी, राजनीतिक विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग,
बाबा मस्तानाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक।

सारांश
हर राष्ट्र की अपनी एक विशिष्ट पहचान होती है जो उसकी संस्कृति, इतिहास, भौगोलिक स्थिति और वैश्विक दृष्टिकोण पर आधारित होती है। किसी भी देश की विदेश नीति उस राष्ट्र की इन विशेषताओं का प्रतिबिंब होती है। यह नीति यह निर्धारित करती है कि वह देश अन्य देशों के साथ किस प्रकार के राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य और सांस्कृतिक संबंध स्थापित करेगा। भारत, जो कि विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, उसकी विदेश नीति न केवल राष्ट्रीय हितों की रक्षा करती है, बल्कि वैश्विक शांति, विकास और सह–अस्तित्व के सिद्धांतों को भी बढ़ावा देती है। भारत की विदेश नीति का निर्माण स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में हुआ, जिनकी दृष्टि, अनुभव और विचारधारा ने भारतीय विदेश नीति की नींव रखी।

भूमिकाः
हर राष्ट्र की अपनी एक विशिष्ट पहचान होती है जो उसकी संस्कृति, इतिहास, भौगोलिक स्थिति और वैश्विक दृष्टिकोण पर आधारित होती है। किसी भी देश की विदेश नीति उस राष्ट्र की इन विशेषताओं का प्रतिबिंब होती है। यह नीति यह निर्धारित करती है कि वह देश अन्य देशों के साथ किस प्रकार के राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य और सांस्कृतिक संबंध स्थापित करेगा। भारत, जो कि विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, उसकी विदेश नीति न केवल राष्ट्रीय हितों की रक्षा करती है, बल्कि वैश्विक शांति, विकास और सह–अस्तित्व के सिद्धांतों को भी बढ़ावा देती है। भारत की विदेश नीति का निर्माण स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में हुआ, जिनकी दृष्टि, अनुभव और विचारधारा ने भारतीय विदेश नीति की नींव रखी।

विदेश नीति की परिभाषाः
विदेश नीति को सरल शब्दों में परिभाषित किया जाए तो यह किसी राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्रों के साथ संबंधों को संचालित करने की एक सुव्यवस्थित योजना या रणनीति होती है। इसमें कूटनीतिक संबंध, व्यापारिक समझौते, सुरक्षा गठबंधन, आपसी सहयोग और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ भागीदारी जैसी गतिविधियाँ शामिल होती हैं। हर देश की विदेश नीति उसकी आंतरिक नीतियों, राजनीतिक नेतृत्व, राष्ट्रीय हितों और वैश्विक परिस्थितियों के आधार पर समय–समय पर परिवर्तित होती रहती है।
प्रसिद्ध राजनीतिक विचारक हैं स जे. मॉर्गेन्थाऊ के अनुसार, "विदेश नीति किसी राष्ट्र की वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से वह अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपने हितों की पूर्ति करता है।" इस प्रकार विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय हितों की रक्षा, क्षेत्रीय अखंडता, आर्थिक समृद्धि और वैश्विक स्तर पर प्रभावशाली भूमिका निभाना होता है।

भारत की पारंपरिक विदेश नीति की झलकः
भारत की पारंपरिक विदेश नीति की जड़ें उसकी प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर, शांतिप्रिय परंपराओं और समावेशी दृष्टिकोण में निहित हैं। भारत ने प्राचीन काल से ही श्वसुधैव कुटुम्बकम्श की अवधारणा को अपनाया है, जिसका अर्थ है "पूरा विश्व एक परिवार है"। यही दृष्टिकोण स्वतंत्र भारत की विदेश नीति का मूल आधार बना। स्वतंत्रता के बाद पंडित नेहरू ने भारत की विदेश नीति को आकार देते हुए इसे चार प्रमुख स्तंभों पर आधारित किया कृ गुटनिरपेक्षता, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व, वैश्विक शांति की स्थापना और आर्थिक विकास में सहयोग।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन भारत की विदेश नीति का एक अहम अंग रहा है। शीत युद्ध के दौर में जब विश्व दो ध्रुवों कृ अमेरिका और सोवियत संघ कृ में बंट चुका था, भारत ने किसी भी सैन्य गुट में शामिल न होकर अपनी स्वतंत्र विदेश नीति को प्राथमिकता दी। इस नीति के तहत भारत ने यह स्पष्ट किया कि वह किसी भी शक्ति ब्लॉक का हिस्सा नहीं बनेगा, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शांति और विकास के लिए स्वतंत्र रूप से कार्य करेगा। यह नीति न केवल भारत की स्वायत्तता को दर्शाती थी, बल्कि विकासशील देशों के लिए एक प्रेरणा भी बनी।

शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व का सिद्धांत भी भारत की पारंपरिक विदेश नीति का महत्वपूर्ण आधार रहा है। चीन के प्रधानमंत्री चाउ एन लाई और भारत के प्रधानमंत्री नेहरू द्वारा प्रतिपादित पंचशील सिद्धांतों के अंतर्गत यह स्पष्ट किया गया कि सभी देशों को एक–दूसरे की संप्रभुता का सम्मान करना चाहिए और पारस्परिक हितों के आधार पर संबंधों का निर्माण करना चाहिए। पंचशील के पांच सिद्धांत कृ एक–दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान, गैर–आक्रामकता, एक–दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना, समानता और पारस्परिक लाभ तथा शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व कृ भारत की विदेश नीति को नैतिक आधार प्रदान करते हैं।

भारत की विदेश नीति का एक अन्य प्रमुख पक्ष अंतरराष्ट्रीय संगठनों में सक्रिय भागीदारी भी है। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के साथ ही भारत उसमें एक सक्रिय सदस्य बना और शांति रक्षक अभियानों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत ने विभिन्न वैश्विक मंचों पर विकासशील देशों के हितों की वकालत की है और परमाणु निरस्त्रीकरण, जलवायु परिवर्तन, मानव अधिकारों और वैश्विक न्याय के पक्ष में अपनी आवाज उठाई है।

इसके अतिरिक्त, भारत ने एशियाई एकता और सहयोग को भी बढ़ावा देने का प्रयास किया। स्वतंत्रता के बाद भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ अच्छे संबंध बनाने की कोशिश की। पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका और भूटान जैसे देशों के साथ भारत ने सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा दिया। हालांकि कई बार इन संबंधों में तनाव भी उत्पन्न हुआ, फिर भी भारत की नीति शांति और वार्ता के माध्यम से समस्याओं का समाधान करने की रही है।

भारत की पारंपरिक विदेश नीति में नैतिकता और आदर्शवाद का विशेष स्थान रहा है। यद्यपि कई बार इसे श्आदर्शवाद की अधिकताश के कारण आलोचना का सामना करना पड़ा, परंतु इसने भारत की वैश्विक छवि को एक शांतिप्रिय, जिम्मेदार और नैतिक राष्ट्र के रूप में स्थापित किया है। इसके अलावा, भारत ने औपनिवेशिक शासन के खिलाफ संघर्षरत देशों को समर्थन दिया और नस्लभेद, उपनिवेशवाद, और दमन के विरुद्ध अपनी नीति स्पष्ट रूप से रखी। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद नीति के विरुद्ध भारत की भूमिका उल्लेखनीय रही है।

भारत की पारंपरिक विदेश नीति में आर्थिक विकास के साधन के रूप में विदेश सहयोग को भी प्राथमिकता दी गई। विशेष रूप से 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद, भारत ने विदेश नीति को आर्थिक कूटनीति से जोड़ते हुए वैश्विक व्यापार, निवेश, तकनीकी सहयोग और विदेशी पूंजी निवेश को महत्व देना शुरू किया। इससे भारत की विदेश नीति में व्यवहारवाद और यथार्थवाद का समावेश हुआ।

भारत की पारंपरिक विदेश नीति एक आदर्श और नैतिक दृष्टिकोण पर आधारित रही है, जो न केवल अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा करती है, बल्कि वैश्विक शांति, न्याय और समानता को भी महत्व देती है। बदलते समय के साथ भारत की विदेश नीति में व्यावहारिकता और रणनीतिक दृष्टिकोण भी आया है, लेकिन इसके मूल सिद्धांत आज भी 'वसुधैव कुटुम्बकम्', पंचशील और गुटनिरपेक्षता की भावना से प्रेरित हैं। भारत आज एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में न केवल अपने पड़ोसियों के साथ संतुलित संबंध बनाए रखने की दिशा में अग्रसर है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी एक संतुलित, विवेकशील और जिम्मेदार राष्ट्र के रूप में अपनी भूमिका निभा रहा है। भारत की यह विदेश नीति, जिसमें आदर्श और व्यवहार का संतुलन है, उसे आने वाले वर्षों में और अधिक प्रभावशाली बनाएगी।

21वीं सदी में वैश्विक परिदृश्य में आए परिवर्तनों का संक्षिप्त परिचयः

21वीं सदी का आरंभ एक नए युग के आगमन की प्रतीक के रूप में हुआ, जिसने विश्व को अनेक स्तरों पर व्यापक और गहरे बदलावों का अनुभव कराया। यह सदी तकनीकी विकास, वैश्वीकरण, जलवायु संकट, उभरती शक्तियों की भूमिका, अंतरराष्ट्रीय संबंधों में पुनर्संरचना और सामाजिक संरचनाओं के बदलाव की

सदी बन गई है। वैश्विक परिदृश्य, जो कभी औद्योगीकरण और उपनिवेशवाद के इर्द–गिर्द घूमता था, अब सूचना, डेटा, नवाचार और सहयोग की दिशा में आगे बढ़ चुका है।

इस सदी का सबसे बड़ा और स्पष्ट परिवर्तन तकनीकी क्रांति के रूप में सामने आया है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस , मशीन लर्निंग, ब्लॉकचेन और इंटरनेट ऑफ थिंग्स जैसी तकनीकों ने न केवल जीवनशैली को बदला है, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य और रक्षा क्षेत्रों में भी क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं। डिजिटल दुनिया ने देशों की सीमाओं को पार कर लोगों को एक वैश्विक नागरिक की तरह जोड़ दिया है।

दूसरा बड़ा परिवर्तन अंतरराष्ट्रीय राजनीति और शक्ति संतुलन में देखने को मिला है। अमेरिका की एकध्रुवीय वैश्विक सत्ता को अब चुनौती दी जा रही है। चीन, भारत, रूस और अन्य उभरते राष्ट्रों की आर्थिक और सैन्य शक्ति में वृद्धि ने बहुध्रुवीयता की अवधारणा को बल दिया है। चीन का बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी, और अफ्रीका में विदेशी निवेश के बढ़ते स्तर इस बात के संकेत हैं कि अब वैश्विक शक्ति केवल पश्चिमी देशों के हाथों में केंद्रित नहीं रह गई है।

21वीं सदी ने जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संकट को भी वैश्विक एजेंडा में शीर्ष स्थान पर ला दिया है। वैश्विक तापमान में वृद्धि, ग्लेशियरों का पिघलना, समुद्र स्तर में वृद्धि, और चरम मौसम घटनाओं की बढ़ती संख्या ने संपूर्ण मानवता के अस्तित्व को चुनौती दी है। पेरिस जलवायु समझौता, सतत विकास लक्ष्य और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर झुकाव, इस परिवर्तन के वैश्विक जवाब हैं।

इस सदी में आर्थिक परिदृश्य भी तेजी से बदला है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने देशों को आर्थिक रूप से जोड़ दिया, लेकिन 2008 की वैश्विक आर्थिक मंदी ने इस एकीकरण की कमजोरी भी उजागर कर दी। इसके साथ ही, नई अर्थव्यवस्थाएं जैसे कि डिजिटल अर्थव्यवस्था, गिग इकोनॉमी और क्रिप्टोकरेंसी ने पारंपरिक आर्थिक ढाँचों को चुनौती दी है।

सामाजिक परिवर्तन भी गहरे हुए हैं। सोशल मीडिया, ऑनलाइन शिक्षा, वर्चुअल कार्य प्रणाली और डिजिटल पहचान जैसे नए सामाजिक व्यवहार उभरे हैं। नारी सशक्तिकरण, लैंगिक समानता, नस्लभेद के खिलाफ आंदोलन, LGBTQ+ अधिकारों की स्वीकार्यता और वैश्विक नागरिकता की अवधारणा ने सामाजिक सोच और मूल्यों को नया आकार दिया है।

कोविड–19 महामारी ने इस सदी के वैश्विक परिदृश्य को अप्रत्याशित रूप से प्रभावित किया। इसने न केवल स्वास्थ्य व्यवस्था की सीमाओं को उजागर किया, बल्कि वैश्विक आपूर्ति शृंखला, शिक्षा प्रणाली और कार्य संस्कृति को भी पुनः परिभाषित किया। साथ ही, महामारी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोग और मानवता की एकता की आवश्यकता को भी रेखांकित किया।

इस प्रकार, 21वीं सदी का वैश्विक परिदृश्य गतिशील, जटिल और बहुआयामी हो गया है। तकनीकी, सामाजिक, पर्यावरणीय और राजनीतिक स्तरों पर जो परिवर्तन आए हैं, वे न केवल हमारी वर्तमान जीवन शैली को प्रभावित कर रहे हैं, बल्कि आने वाले भविष्य की दिशा भी निर्धारित कर रहे हैं।

भारत की विदेश नीति में 21वीं सदी के आगमन के साथ एक नया मोड़ आया है, जिसमें पारंपरिक आदर्शवाद के साथ–साथ व्यावहारिकता और रणनीतिक सोच का समावेश हुआ है। स्वतंत्रता के बाद से ही भारत की विदेश नीति गुटनिरपेक्षता, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व और नैतिकता पर आधारित रही, लेकिन समय के साथ बदलती वैश्विक परिस्थितियों ने इसे अधिक लचीला और यथार्थवादी बना दिया। अब भारत केवल आदर्शों की बात नहीं करता, बल्कि अपने सामरिक, आर्थिक और तकनीकी हितों को भी प्राथमिकता देता है। भारत की विदेश नीति में अब 'Look East' से 'Act East', 'गुटनिरपेक्षता' से 'मल्टी–अलाइनमेंट', और 'आर्थिक सहायता' से 'आर्थिक भागीदारी' की दिशा में बदलाव देखा गया है। रक्षा, सुरक्षा, निवेश, जलवायु, डिजिटल कूटनीति, और प्रवासी भारतीयों से जुड़ी नीतियों में भी स्पष्ट रूप से सक्रियता बढ़ी है।

इन परिवर्तनों को प्रेरित करने वाले कई आंतरिक और बाह्य कारक हैं। आंतरिक कारकों की बात करें तो सबसे पहले भारत की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था को ध्यान में रखना होगा। एक उभरती वैश्विक शक्ति के रूप में भारत को अपने आर्थिक हितों की सुरक्षा और विस्तार के लिए विदेश नीति को अधिक केंद्रित बनाना पड़ा है। दूसरा बड़ा आंतरिक कारक है सामरिक आत्मनिर्भरता और रक्षा क्षेत्र में मजबूती, जिससे भारत अपनी सीमाओं की रक्षा के साथ–साथ अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी सशक्त रूप से खड़ा हो सके। इसके अलावा, राजनीतिक नेतृत्व में बदलाव ने भी विदेश नीति को प्रभावित किया है; जैसे 2014 के बाद से विदेश नीति अधिक आक्रामक, व्यावसायिक और रणनीतिक दृष्टिकोण से संचालित होने लगी है।

बाहरी कारकों में प्रमुख है वैश्विक शक्ति संतुलन में बदलाव। अमेरिका और चीन के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा, रूस की पुनः सक्रिय भूमिका, और एशिया–प्रशांत क्षेत्र में बढ़ती सैन्य हलचल ने भारत को अपनी विदेश नीति को अधिक लचीला और बहुपक्षीय बनाना सिखाया है। चीन की आक्रामकता, विशेषकर सीमा विवादों और समुद्री क्षेत्रों में उसकी गतिविधियों ने भारत को रक्षा कूटनीति, क्वाड जैसे समूहों में भागीदारी, और इंडो–पैसिफिक रणनीति अपनाने की दिशा में प्रेरित किया है। इसके अलावा, वैश्विक आतंकवाद, साइबर सुरक्षा और ऊर्जा संकट जैसे मुद्दों ने भी भारत को अधिक सतर्क और सहयोगी विदेश नीति की ओर उन्मुख किया है।

21वीं सदी की बात करें तो यह समय चुनौतियों से भरा हुआ है, और भारत के लिए भी कुछ विशेष मुख्य चुनौतियाँ उभरकर सामने आई हैं। सबसे पहली चुनौती है चीन के साथ रणनीतिक प्रतिस्पर्धा और सीमा विवाद, जो न केवल सैन्य तनाव को बढ़ाता है बल्कि क्षेत्रीय स्थिरता को भी प्रभावित करता है। दूसरी बड़ी चुनौती है आतंकवाद, विशेषकर पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद, जिससे निपटने के लिए भारत को वैश्विक सहयोग बढ़ाना होता है। तीसरी चुनौती है जलवायु परिवर्तन, जिसका सीधा असर भारत की अर्थव्यवस्था, कृषि और आपदा प्रबंधन पर पड़ता है। वैश्विक आर्थिक अस्थिरता, व्यापार युद्ध, और ऊर्जा की बढ़ती कीमतें भी भारत की विदेश नीति को सतर्क बनाती हैं। साथ ही, डिजिटल स्पेस और साइबर खतरों से जुड़ी सुरक्षा चुनौतियाँ, तथा प्रवासी भारतीयों के अधिकारों की रक्षा भी अब विदेश नीति का अहम हिस्सा बन चुकी हैं।

इस प्रकार, भारत की विदेश नीति अब पारंपरिक मूल्यों के साथ–साथ समकालीन वैश्विक यथार्थ को भी समाहित कर रही है। बदलते समय, तकनीक और भू–राजनीतिक परिवेश में भारत का रुख पहले से कहीं अधिक परिपक्व, व्यावहारिक और उद्देश्यपूर्ण हो गया है।

भारत की विदेश नीति का विकासः नेहरू युग से आर्थिक उदारीकरण तक

भारत की स्वतंत्रता के बाद विदेश नीति को दिशा देने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका पंडित जवाहरलाल नेहरू ने निभाई। नेहरू युग (1947–1964) की विदेश नीति आदर्शवाद, शांति, और आत्मनिर्भरता की भावना से प्रेरित थी। उन्होंने भारत को नवोदित राष्ट्रों के नेता के रूप में स्थापित करने की कोशिश की, जो उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध एक नई विश्व व्यवस्था का निर्माण करना चाहता था। इसी सोच के तहत उन्होंने गुटनिरपेक्ष आंदोलन की नींव रखी। नेहरू का मानना था कि भारत को किसी भी महाशक्ति गुट कृ चाहे वह अमेरिका हो या सोवियत संघ कृ का हिस्सा नहीं बनना चाहिए, बल्कि स्वतंत्र रूप से अपने राष्ट्रीय हितों और नैतिक मूल्यों के आधार पर विदेश नीति बनानी चाहिए। गुटनिरपेक्षता केवल निष्क्रिय तटस्थता नहीं थी, बल्कि एक सक्रिय कूटनीतिक रुख था, जिसके माध्यम से भारत ने विश्व शांति, परमाणु निरस्त्रीकरण और विकासशील देशों के हितों की वकालत की।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन की स्थापना 1961 में बेलग्रेड सम्मेलन में युगोस्लाविया, मिस्र, भारत, इंडोनेशिया और घाना जैसे देशों के सहयोग से हुई। यह आंदोलन भारत की उस विदेश नीति का प्रतिबिंब था जो न तो पूंजीवादी और न ही साम्यवादी मॉडल को पूरी तरह अपनाना चाहती थी। हालांकि इस नीति की व्यवहारिकता पर प्रश्न उठाए गए, विशेषकर 1962 के भारत–चीन युद्ध और बाद में 1971 के भारत–पाक युद्ध के दौरान जब भारत को सोवियत संघ का समर्थन लेना पड़ा, लेकिन फिर भी यह नीति भारत की स्वतंत्र और आत्मनिर्भर छवि को स्थापित करने में सफल रही।

शीत युद्ध काल में भारत का रुख संतुलित लेकिन रणनीतिक था। भारत ने दुनिया को दो गुटों में बंटते देखा कृ एक ओर अमेरिका के नेतृत्व वाला पश्चिमी गुट, और दूसरी ओर सोवियत संघ का साम्यवादी गुट। इस विभाजन के बावजूद भारत ने कोशिश की कि वह दोनों गुटों से दूरी बनाए रखे, और केवल अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार कदम उठाए। लेकिन समय–समय पर भारत को मजबूरीवश झुकाव दिखाना पड़ा, जैसे 1971 में जब बांग्लादेश मुक्ति संग्राम के समय अमेरिका पाकिस्तान के पक्ष में था, तो भारत ने सोवियत संघ के साथ श्बीस वर्षों की मैत्री संधिश पर हस्ताक्षर किए। इसी तरह, भारत ने अफगानिस्तान संकट, वियतनाम युद्ध, और छ।ड शिखर सम्मेलनों के माध्यम से वैश्विक शांति की ओर भारत के रुख को लगातार स्पष्ट किया।

1991 के बाद भारत की विदेश नीति में एक बड़ा परिवर्तन आया, जब देश ने आर्थिक संकट के चलते आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (स्च्ळ) की नीति अपनाई। यह बदलाव केवल आर्थिक ही

नहीं था, बल्कि इसका गहरा असर विदेश नीति पर भी पड़ा। अब भारत की प्राथमिकता केवल राजनीतिक और रणनीतिक संबंधों तक सीमित नहीं रही, बल्कि आर्थिक हित और वैश्विक व्यापार की दिशा में भी बढ़ गई। नई विदेश नीति का उद्देश्य विदेशी निवेश आकर्षित करना, तकनीकी सहयोग प्राप्त करना, और अंतरराष्ट्रीय व्यापार में भारत की हिस्सेदारी बढ़ाना बन गया। इससे भारत की विदेश नीति अधिक आर्थिक कूटनीति पर केंद्रित हो गई।

इस दौर में भारत ने विश्व व्यापार संगठन अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक जैसे संस्थानों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाई। अमेरिका, यूरोप, जापान और दक्षिण एशियाई देशों के साथ व्यापारिक और निवेश संबंधों को बढ़ाया गया। इसके अलावा, भारत ने अपने प्रवासी समुदाय की शक्ति को पहचाना और प्रवासी भारतीय नीति को मजबूत किया। श्स्ववा म्ेंज च्वसपबलश के माध्यम से दक्षिण–पूर्वी एशिया के देशों से निकटता बढ़ाई गई, जो आगे चलकर श।बज म्ेंज च्वसपबलश में परिवर्तित हुई।

उदारीकरण के बाद भारत की विदेश नीति अधिक व्यावहारिक, बहुआयामी और वैश्विक हो गई। अब भारत केवल नैतिकता की बात नहीं करता, बल्कि रणनीतिक साझेदारियों, रक्षा समझौतों, व्यापारिक गठबंधनों और तकनीकी सहयोग की दिशा में भी सक्रिय भूमिका निभाता है। इस तरह 1991 के बाद की विदेश नीति ने भारत को वैश्विक मंच पर अधिक प्रभावशाली, आधुनिक और व्यावहारिक राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में सहायता की।

21वीं सदी में भारत की विदेश नीति में प्रमुख परिवर्तनः

21वीं सदी में भारत की विदेश नीति में व्यापक और बहुआयामी परिवर्तन देखने को मिले हैं। शीत युद्ध के बाद विश्व व्यवस्था में आए बदलाव, वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति, क्षेत्रीय तनावों, और भारत की आर्थिक आकांक्षाओं ने विदेश नीति को अधिक व्यावहारिक, हित–आधारित और रणनीतिक बना दिया है। जहां स्वतंत्रता के बाद की विदेश नीति नैतिक मूल्यों, गुटनिरपेक्षता और आदर्शवाद पर आधारित थी, वहीं 21वीं सदी की विदेश नीति में यथार्थवाद, बहुपक्षीय साझेदारियाँ, और राष्ट्रीय हितों की रक्षा को प्राथमिकता दी जा रही है।

सबसे प्रमुख परिवर्तन भारत की आर्थिक हित–आधारित विदेश नीति के रूप में सामने आया है। 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद भारत की विदेश नीति का दृष्टिकोण बदल गया, और यह धीरे–धीरे आर्थिक कूटनीति की ओर उन्मुख हुई। 21वीं सदी में यह प्रवृत्ति और भी स्पष्ट हुई है। अब भारत का उद्देश्य केवल राजनीतिक संबंध बनाना नहीं, बल्कि विदेशी निवेश को आकर्षित करना, निर्यात को बढ़ावा देना, तकनीकी सहयोग प्राप्त करना, और ऊर्जा संसाधनों तक सुरक्षित पहुंच सुनिश्चित करना भी है। भारत ने विश्व के विभिन्न देशों के साथ द्विपक्षीय व बहुपक्षीय व्यापारिक समझौते किए हैं। साथ ही, खाड़ी देशों, रूस, ईरान और मध्य एशिया के साथ ऊर्जा सुरक्षा हेतु तेल, गैस और अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में समझौतों पर ज़ोर दिया गया है। "International Solar Alliance" और "One Sun, One World, One Grid" जैसी पहलें भी भारत की ऊर्जा कूटनीति को वैश्विक स्तर पर प्रभावशाली बनाती हैं।

दूसरा प्रमुख परिवर्तन भारत की रणनीतिक साझेदारियों में देखा गया है। वैश्विक शक्ति संतुलन में हो रहे बदलावों के बीच भारत ने अमेरिका, रूस, जापान, यूरोपीय संघ, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया और इज़राइल जैसे देशों के साथ बहुआयामी संबंध स्थापित किए हैं। अमेरिका के साथ भारत के संबंध अब केवल सामरिक नहीं, बल्कि रक्षा, विज्ञान, शिक्षा, परमाणु ऊर्जा और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी मजबूत हुए हैं। 2008 में हुआ भारत–अमेरिका असैन्य परमाणु समझौता, दोनों देशों के बीच रणनीतिक विश्वास का प्रतीक था। वहीं रूस के साथ पारंपरिक रक्षा सहयोग को बनाए रखते हुए भारत ने नई तकनीकों और ऊर्जा परियोजनाओं में साझेदारी को बढ़ावा दिया है। इज़राइल के साथ रक्षा, कृषि और जल प्रबंधन के क्षेत्रों में सहयोग गहरा हुआ है, जबकि जापान के साथ आधारभूत ढांचे और स्मार्ट सिटी परियोजनाओं पर काम किया जा रहा है। इन सभी साझेदारियों का मूल उद्देश्य भारत की रक्षा क्षमताओं को मजबूत करना, तकनीकी आत्मनिर्भरता बढ़ाना, और वैश्विक मंचों पर अपनी प्रभावशीलता को सुदृढ़ करना है।

भारत की विदेश नीति में तीसरा महत्वपूर्ण बदलाव पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को पुनर्परिभाषित करने के रूप में हुआ है। श्गुड नेबर पॉलिसीश को आधुनिक रूप देते हुए भारत ने 'Neighbourhood First' नीति अपनाई, जिसके अंतर्गत वह अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंध सुधारने और सहयोग बढ़ाने को प्राथमिकता देता है। बांग्लादेश के साथ भूमि सीमा समझौता, बिजली व्यापार और संपर्क परियोजनाएँ संबंधों में मजबूती की मिसाल हैं। नेपाल के साथ सामाजिक और सांस्कृतिक घनिष्ठता के बावजूद राजनीतिक तनावों को

संवाद और विकास परियोजनाओं के ज़रिये सुलझाने का प्रयास किया गया है। श्रीलंका में तमिल मुद्दे और चीनी प्रभाव के बावजूद भारत ने विकास सहयोग और निवेश के माध्यम से संबंधों को बनाए रखा है। पाकिस्तान के साथ हालांकि संबंधों में कटुता बनी रही है, विशेषकर पुलवामा हमले और अनुच्छेद 370 के निरस्त होने के बाद, फिर भी भारत का रुख स्पष्ट और सख्त रहा है कृ आतंकवाद और वार्ता एक साथ नहीं चल सकते। वहीं चीन के साथ संबंधों में व्यापार और संघर्ष का दोहरा स्वरूप रहा है। सीमा पर तनाव और सैन्य टकरावों के बावजूद दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंध मजबूत हैं। लेकिन गलवान घाटी की झड़प के बाद भारत की नीति अधिक सजग और सामरिक दृष्टिकोण वाली हो गई है, जिसमें आत्मनिर्भर भारत अभियान और चीन पर आर्थिक निर्भरता कम करने की सोच निहित है।

21वीं सदी में भारत की विदेश नीति का एक और महत्वपूर्ण आयाम उसकी क्षेत्रीय और वैश्विक भूमिका का विस्तार है। भारत अब केवल दक्षिण एशिया तक सीमित नहीं है, बल्कि वह इंडो–पैसिफिक क्षेत्र, अफ्रीका, मध्य एशिया, और लैटिन अमेरिका तक अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है। भारत अब फन।क (भारत, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया) जैसे रणनीतिक मंचों में सक्रिय है, जिसका उद्देश्य हिंद–प्रशांत क्षेत्र में मुक्त, समावेशी और नियम आधारित व्यवस्था को बढ़ावा देना है। भारत ठत्प्ै (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका), SCO (शंघाई सहयोग संगठन), और ASEAN जैसे संगठनों के माध्यम से वैश्विक दक्षिण के हितों की वकालत कर रहा है और विकासशील देशों की आवाज बन रहा है। भारत की इंडो–पैसिफिक रणनीति इस बात का संकेत है कि वह समुद्री सुरक्षा, वैश्विक व्यापार मार्गों की सुरक्षा, और क्षेत्रीय स्थिरता में सक्रिय भूमिका निभाना चाहता है। साथ ही, "SAGAR" (Security and Growth for All in the Region) नीति हिंद महासागर क्षेत्र में भारत के बढ़ते प्रभाव का संकेत देती है।

तकनीक के युग में भारत की विदेश नीति ने एक नया और अत्यंत प्रासंगिक आयाम भी ग्रहण किया है कृ डिजिटल और साइबर कूटनीति। भारत की 'डिजिटल इंडिया' पहल और सूचना प्रौद्योगिकी में वैश्विक बढ़त ने उसे इस क्षेत्र में एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में स्थापित किया है। भारत अब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर साइबर सुरक्षा, डेटा प्राइवेसी, डिजिटल गवर्नेंस और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे मुद्दों पर सक्रिय रूप से भाग ले रहा है। भारत ने कई देशों के साथ साइबर सुरक्षा समझौते किए हैं, और डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे आधार, न्च्, ब्ॅप्छ को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साझा कर रहा है। यह पहलें न केवल भारत की तकनीकी क्षमता कदर्शाती हैं, बल्कि उसे एक डिजिटल नेतृत्वकर्ता राष्ट्र के रूप में भी प्रस्तुत करती हैं।

भारत की विदेश नीतिः रणनीतियाँ, कूटनीतिक प्रयास, आलोचनाएँ और भविष्य की दिशा

21वीं सदी में भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी उपस्थिति को न केवल मज़बूत किया है बल्कि एक जिम्मेदार वैश्विक शक्ति के रूप में अपनी भूमिका भी स्थापित की है। बदलते वैश्विक परिदृश्य, आर्थिक आवश्यकताओं, तकनीकी क्रांति, और सुरक्षा संबंधी चिंताओं ने भारत को अपनी विदेश नीति में अनेक रणनीतिक और कूटनीतिक प्रयोगों की ओर अग्रसर किया है। पारंपरिक गुटनिरपेक्षता से निकलकर अब भारत बहुपक्षीय सहयोग, रणनीतिक साझेदारियों और व्यावहारिक कूटनीति की ओर बढ़ा है। इस विकासशील यात्रा में कुछ सफलताएँ तो मिली हैं, परंतु चुनौतियाँ भी कम नहीं रहीं। इस निबंध में हम भारत की प्रमुख रणनीतियों, कूटनीतिक प्रयासों, उनकी सीमाओं और भविष्य की दिशा का गहन विश्लेषण करेंगे।

भारत की रणनीतियाँ और कूटनीतिक प्रयास

1. एक्ट ईस्ट नीति (Act East Policy)

भारत की विदेश नीति का एक अहम मोड़ "स्ववा म्ेंज च्वसपबल" से "।बज म्ेंज च्वसपबल" की ओर परिवर्तन रहा है। यह नीति 1990 के दशक में शुरू हुई थी, लेकिन 2014 में इसे और अधिक सक्रिय एवं व्यावहारिक रूप दिया गया। "।बज म्ेंज" नीति का उद्देश्य केवल सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंधों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसमें सुरक्षा, सामरिक साझेदारी और राजनीतिक संवाद को भी शामिल किया गया।

भारत ने ASEAN देशों के साथ व्यापार, निवेश, कनेक्टिविटी और सामरिक संबंधों को गहराया है। म्यांमार, वियतनाम, इंडोनेशिया, थाईलैंड जैसे देशों के साथ समुद्री सुरक्षा और रक्षा सहयोग पर विशेष ध्यान दिया गया है। भारत–म्यांमार–थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग, "झ्संकंद डनसजप–डवकंस ज्तंदेपज च्तवरमबज" जैसी परियोजनाएं भारत की पूर्वी सीमा को दक्षिण–पूर्व एशिया से जोड़ने का कार्य कर रही हैं। साथ ही, क्वाड

(QUAD) के ज़रिए जापान, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया के साथ मिलकर हिंद–प्रशांत क्षेत्र में संतुलन बनाए रखने की रणनीति भी इसी नीति का हिस्सा है।

2. डिजिटल और सॉफ्ट पावर डिप्लोमेसी

भारत ने 21वीं सदी में तकनीकी क्षेत्र में अपनी क्षमताओं को कूटनीति से जोड़ने का कार्य बखूबी किया है। "डिजिटल इंडिया" अभियान, आधार, UPI, CoWIN जैसे डिजिटल पब्लिक प्लेटफॉर्म भारत की सॉफ्ट पावर का हिस्सा बन गए हैं। भारत ने कई विकासशील देशों को डिजिटल गवर्नेंस, ई–हेल्थ, फिनटेक और साइबर सुरक्षा में सहायता प्रदान की है।

इसके अतिरिक्त, भारत की संस्कृति, योग, आयुर्वेद, बॉलीवुड और प्रवासी भारतीय समुदाय ने भी सॉफ्ट पावर डिप्लोमेसी को एक नई ऊँचाई दी है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, भारतीय त्योहारों का वैश्विक उत्सव, और ICCR (Indian Council for Cultural Relations) की सांस्कृतिक गतिविधियाँ भारत की सकारात्मक वैश्विक छवि को मजबूत करती हैं। डिजिटल डिप्लोमेसी के तहत डम। (विदेश मंत्रालय) ने सोशल मीडिया और डिजिटल मंचों पर भारत की उपस्थिति को सशक्त बनाया है।

3. रक्षा सहयोग और सैन्य गठजोड़:

भारत की कूटनीति अब केवल वार्ताओं और शांति संदेशों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सुरक्षा और रक्षा एक प्रमुख घटक बन गए हैं। भारत ने फ्रांस, अमेरिका, रूस, इज़राइल और जापान जैसे देशों के साथ रक्षा सहयोग को मजबूती दी है। रक्षा समझौते, संयुक्त सैन्य अभ्यास (जैसे मालाबार, गरुड़, वज्र प्रहार), हथियारों की खरीद–बिक्री और तकनीकी साझेदारी भारत की रक्षा कूटनीति का हिस्सा हैं।

'मेक इन इंडिया' के तहत भारत अब रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की दिशा में प्रयासरत है। इसके साथ ही, हिंद महासागर क्षेत्र में 'SAGAR' (Security and Growth for All in the Region) नीति के तहत भारत नौसैनिक सहयोग बढ़ा रहा है, जिससे समुद्री सुरक्षा और आपदा प्रबंधन में क्षेत्रीय नेतृत्व स्थापित किया जा सके।

4. वैश्विक मंचों पर सक्रिय भागीदारी:

भारत अब संयुक्त राष्ट्र, G–20, BRICS, SCO, ASEAN, QUAD, और IORA जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों और मंचों पर न केवल भागीदार है, बल्कि एक सशक्त आवाज़ भी बन चुका है। भारत ने वैश्विक मुद्दों जैसे जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, आतंकवाद, खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा, साइबर अपराध, और बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था पर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया है।

भारत ने G–20 की अध्यक्षता के दौरान "टेंनकींपअं ज्ञनजनउइांउ" के सिद्धांत को वैश्विक नीति में स्थान दिलाया। ठत्प्ै में भारत ने वित्तीय संस्थानों की स्थापना और विकासशील देशों के हितों को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के लिए भारत की दावेदारी भी उसकी बढ़ती वैश्विक भूमिका का प्रमाण है।

आलोचना और सीमाएँ

1. नीति में निरंतरता की कमी:

भारत की विदेश नीति अक्सर राजनीतिक नेतृत्व के परिवर्तन के साथ दिशा बदलती नज़र आती है। जहाँ एक ओर कुछ दीर्घकालिक नीतियाँ जैसे गुटनिरपेक्षता या 'Neighbourhood First' स्थायित्व का संकेत देती हैं, वहीं कुछ निर्णय जैसे त्ब्म्च् से बाहर रहना, ईरान के साथ चाबहार प्रोजेक्ट में धीमापन, या अफगानिस्तान में स्थिति के प्रति प्रतिक्रिया में देरी कृ नीति में अस्थिरता की ओर इशारा करते हैं।

इसके अतिरिक्त, भारत कई बार "रणनीति" और "प्रतिक्रिया" के बीच फँसा हुआ दिखाई देता है। यह प्रवृत्ति उस समय स्पष्ट होती है जब भारत के समक्ष चीन जैसे शक्तिशाली राष्ट्रों के आक्रामक रुख का सामना करना पड़ता है।

2. कुछ पड़ोसी देशों के साथ असफल रिश्ते:

भारत की श्छमपहीइवनतीववक थ्पतेजश नीति के बावजूद, कुछ पड़ोसी देशों के साथ उसके संबंध तनावपूर्ण बने हुए हैं। पाकिस्तान के साथ बातचीत और संघर्ष का चक्र वर्षों से चला आ रहा है, जिसमें प्रगति की संभावना बार–बार धूमिल हुई है। चीन के साथ भी सीमा विवाद, गलवान जैसी घटनाएँ और आर्थिक प्रतिस्पर्धा रिश्तों को जटिल बनाती हैं।

नेपाल के साथ भौगोलिक और राजनीतिक विवाद, बांग्लादेश के साथ बढ़ते चीनी प्रभाव, और श्रीलंका में भारत विरोधी भावना कृ यह सभी संकेत देते हैं कि भारत अभी भी अपने immediate neighbourhood में स्थायी प्रभाव नहीं बना पाया है।

3. आर्थिक संसाधनों की सीमाएँ:

भारत वैश्विक मंच पर एक उभरती शक्ति है, लेकिन आर्थिक संसाधनों की सीमाएँ अक्सर उसकी महत्वाकांक्षी विदेश नीति के रास्ते में बाधा बनती हैं। कई देशों की तुलना में भारत का विदेशी सहायता बजट कम है, जिसके कारण अफ्रीका, मध्य एशिया और दक्षिण एशिया में चीन जैसी शक्तियों की तुलना में उसकी पकड़ सीमित रहती है।

चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाएँ:

21वीं सदी में भारत की विदेश नीति में जो परिवर्तन देखने को मिले हैं, वे केवल सतही नहीं बल्कि रणनीतिक और संरचनात्मक रहे हैं। अब यह नीति केवल नैतिक आदर्शों और गुटनिरपेक्ष सिद्धांतों पर आधारित नहीं है, बल्कि व्यावहारिक सोच, बहुपक्षीय सहयोग और राष्ट्रीय हितों की स्पष्ट प्राथमिकता पर टिकी हुई है। आज भारत की विदेश नीति में एक स्पष्ट बदलाव की दिशा दिखाई देती है कृ यह अब पहले से कहीं अधिक सक्रिय, उद्देश्यमूलक और बहुआयामी हो गई है।

भारत अब एक उभरती हुई शक्ति के रूप में न केवल अपने क्षेत्रीय प्रभाव को बढ़ाने का प्रयास कर रहा है, बल्कि वैश्विक मंचों पर भी अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रहा है। 'स्ववा मेंज' से '।बज East', 'Neighbourhood First', 'SAGAR', 'Indo–Pacific Strategy', और 'Digital Diplomacy' जैसे पहल भारत की विदेश नीति की बदलती प्रवृत्तियों को रेखांकित करते हैं। रक्षा सहयोग, ऊर्जा सुरक्षा, तकनीकी साझेदारी, और साइबर कूटनीति अब विदेश नीति के अनिवार्य घटक बन गए हैं। इसके साथ–साथ भारत की "सॉफ्ट पावर" का उपयोग भी योग, संस्कृति, शिक्षा और डिजिटल तकनीक के माध्यम से हो रहा है, जिससे विश्व समुदाय में भारत की एक सकारात्मक और विश्वसनीय छवि बनी है।

इन सकारात्मक परिवर्तनों के बीच कुछ बड़ी चुनौतियाँ भी बनी हुई हैं। सबसे पहली चुनौती है पड़ोसी देशों के साथ संबंधों का अस्थिर स्वरूप। पाकिस्तान के साथ सीमा और आतंकवाद को लेकर तनाव, चीन के साथ सीमा विवाद और सामरिक प्रतिस्पर्धा, नेपाल और श्रीलंका जैसे देशों में चीनी प्रभाव की बढ़त — यह सभी भारत की "छमपहीइवनतीववक थ्पतेज" नीति की प्रभावशीलता को सीमित करते हैं। दूसरी चुनौती है वैश्विक भू–राजनीतिक अस्थिरता, जिसमें अमेरिका–चीन प्रतिस्पर्धा, यूक्रेन युद्ध, मध्य पूर्व में अस्थिरता और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला संकट जैसी स्थितियाँ भारत को एक संतुलित नीति अपनाने के लिए मजबूर करती हैं। तीसरी बड़ी चुनौती है आर्थिक संसाधनों की सीमा। वैश्विक स्तर पर प्रभावशाली भूमिका निभाने के लिए जिस स्तर की आर्थिक और सैन्य ताकत की ज़रूरत है, उसमें भारत को अभी और प्रयास करने होंगे।

भविष्य की दृष्टि से भारत के सामने कई संभावनाएँ भी हैं। भारत अपने डिजिटल नवाचारों को वैश्विक स्तर पर साझा कर सकता है, जिससे विकासशील देशों के साथ संबंध मजबूत होंगे। रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देकर न केवल सुरक्षा को मज़बूती दी जा सकती है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारत को एक रक्षा निर्यातक के रूप में स्थापित किया जा सकता है। साथ ही, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, और मध्य एशिया जैसे अपेक्षाकृत उपेक्षित क्षेत्रों में भारत की उपस्थिति बढ़ाकर कूटनीतिक विस्तार संभव है।

भारत की विदेश नीति को अब "यथार्थवादी आदर्शवाद" के रूप में देखा जा सकता है, जहाँ मूल्यों और हितों के बीच संतुलन बनाते हुए एक सशक्त, आत्मविश्वासी और उत्तरदायी वैश्विक शक्ति की छवि गढ़ी जा रही है। यदि भारत इन अवसरों का रणनीतिक रूप से लाभ उठाए, और आंतरिक चुनौतियों पर काबू पाए, तो 21वीं सदी वास्तव में भारत के अंतरराष्ट्रीय उदय की सदी बन सकती है।